जीवनी

जीवनी तथ्याश्रीत गद्य की एक लोकप्रिय विधा है। यद्यपि संस्कृत साहित्य परंपरा में चरितकाव्य' नामक प्रबंध पद्य का एक भेद भी है। लेकिन आधुनिक जीवनी साहित्य का रचना विकास संस्कृत की चरित-काव्य परंपरा में न होकर पाश्चात्य साहित्य के लाईफ स्कैच और बायोग्राफी (LiFe Sketch and Biography) के आधार पर हो रहा है। एलैक्जेन्डर पोपने लिखा है-- "The proper Study of mankind is man" अर्थात मनुष्य जाति का सब से उपयुक्त अध्ययन का विषय मनुष्य ही हैं। साहित्य को केंद्र बिंदु मनुष्य होता है। यद्यपि साहित्य की हर विधा में मनुष्य है लेकिन उसके साथ कल्पना भी होती है। जीवनी में व्यक्ति विशेष के यथार्थ-जीवनी के माध्यम से मनुष्य जीवन का अध्ययन होता है। यथार्थ-जीवन की प्रस्तुति होने के बावजूद जीवनी मात्र व्यक्ति विशेष के संदर्भित वह एक साहित्यिक विधा भी है।

परिभाषाएँ :--

हेराल्ड निकोन्सन:-- "किसी एक व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का सत्य चित्रण करके उसे कलात्मकता से लिखा जाना ही जीवनी है।"

बाबू गुलाबराय :-- "जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं वरन् चित्रण है । वह साहित्य की विधा है और इसमें साहित्य और काव्य के सभी गुण है। वह एक मनुष्य के अंत: और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरुपण है।"

डॉ. श्रीमती चंद्रावती सिंह :-- " जीवन चरित्र-जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं का स्थूल साहित्यिक उल्लेख भी नहीं है। जीवनी साहित्य एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य की मुद्रा और भावना उसके मन की क्रिया प्रतिक्रियाओं और जीवन के क्रम में उसके मस्तिष्क के विकास का अध्ययन एक अत्यंत गुढ विषय है। मनुष्य का व्यक्तितत्व मानसिक क्रियाओं का परिणाम है। इन मानासिक क्रियाओं का अध्ययन और उनका सफल चित्रण जीवनी साहित्य का अनिवार्य विषय है।

जीवनी के तत्त्व

जीवनी के केंद्र में जीवनी-नायक है। अतः उसके व्यक्तित्व की कलात्मक प्रस्तुति के लिए आवश्य अंग जीवनी के तत्त्व हो सकते हैं। इस दृष्टि से वस्तु, चरित्र चित्रण, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, और उद्देश्य जीवनी के तत्त्व हो सकते हैं।

1] वस्तु या वर्ण्य विषय :-- जीवनी में चित्रित घटनाएँ चारित्र-नायक के यथार्थ जीवन का अंग होती है। जीवनी एक प्रकारका व्यक्तिपरक इतिहास ही होता है। इसलिए जीवनी लेखक को इतिहास-अन्वेषक दृष्टिकोण को अपनाकर चरित्र नायक के जीवन वृत्त की प्रामाणिक सामग्री का संकलन करना होता है। यह सामग्री विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त हो
सकती है।

प्रो. केसल की दृष्टि में ये स्त्रोत इस प्रकार है–

- उस व्यक्ति पर लिखे गये या उससे संबद्ध ग्रंथ
- व्यक्ति के पत्र डायरी आदि
- समकालिनों के संस्मरण
- उस व्यक्ति के मित्रों, संबंधियों आदि से उपलब्ध सामग्री या सूचनाएँ
- चरित्र-नायक के निवास स्थलों का भ्रमण, पर्यवेक्षण आदि।

चरित्र-नायक यदि कलाकार या साहित्यिक हो तो उसकी साहित्य कृतियाँ या कलाकृतियाँ भी इस कार्य में महत्वपूर्ण सहायता करती है। जीवनवृत्त की प्रामाणिक सामग्री संकलन के बाद उसका चयन और क्रमबद्ध तथा कलात्मक ढंग से उसकी प्रस्तुती करनी होती है। घटना - प्रसंगों का चयन किस दृष्टि से हो यह विवाद का विषय होगा। यह बहुत कुछ जीवनी लेखक के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में हिंदी के सफल जीवनी लेखक विष्णु प्रभाकर ने 'आवारा मसिहा' की भूमिका में लिखा है– "जीवनी क्या है ? अनुभवों का शृंखलाबद्ध कलात्मक चयन! इसमें ही घटनाएँ पिरोई जाती है, जिनमें संवेदना की गहराई हो। भावो को आलोकित करने शक्ति हो। घटनाओं का चयन लेखक किसी नीति, तर्क या दर्शन से प्रभावित होकर नहीं करता, वह गोताखोरों की तरह जीवन - सागर में डूब-डूब कर मोती चुनता है। सच्ची संवेदना की हर घडी वही मोती होती है।"

घटनाओं का चयन करते हुए यह ध्यान रखना है की उसके माधयम से चरित्र-नायक के सर्वांग व्यक्तित्व की प्रामाणिक अभिव्यक्त हो सके। डॉ. जानसन ने लिखा है– " जीवनीकार का लक्ष्य जीवन की उन घटनाओं और क्रियाकलापों का रंजक वर्णन करना होता है, जो व्यक्ति विशेष की बड़ी से बड़ी महानता से लेकर छोटी से छोटी घरेलू बातों से संबंधित होते है ।"

जीवनी में व्यक्ति का संपूर्ण जीवनवृत्त भी हो सकता है और किसी एक काल अथवा चरित्र पक्ष पर भी जीवनी लिखी जा सकती है। जीवनी की वस्तु में सत्यता, सुगठितता, वैज्ञानिकता के साथ साथ रोचकता भी होनी चाहिए।

2] चरित्र चित्रण :-- जीवनी को जीवन-चरित्र भी कहा जाता है। अतः चरित्र-चित्रण जीवनी का महत्वपूर्ण तत्त्व कहा जा सकता है। चरित्र-नायक के को सर्वांग व्यक्तित्व का चित्रण जीवनी का प्रमुख लक्ष होता है। चरित्र के बाह्य व्यक्तित्व का अंकन महत्वपूर्ण होता है।चरित्र नायक के प्रति अतिरिक्त श्रद्धा-भाव जहाँ उसके उदात्तीकरण के खतरे तक पहुंचाता है, उसी प्रकार निर्मम तटस्थता तथा छिद्रान्वेषीवृत्ति भी जीवनी के चरित्र नायक के प्रति निर्णयात्मक आलोचक नहीं अध्येता है। उसका कार्य चरित्र - नायक के गुण-दोषों का न तो मात्र अंकन करना है और न उसका समर्थन, बल्कि अध्ययन करना है।

श्री रामनाथ सुमन ने लिखा है– "लेखक जहाँ नायक के जीवन में छिपे उसके विकास को, उसके व्यक्तित्व के रहस्य को, उसकी मुख्य जीवनधारा को खोलकर पाठकों के सामने रख देता है। वहाँ जीवनी लेखन कला संतुष्ट नहीं होती। वह आवरण को भेदकर अन्तः स्वरूप और आंतरिक सत्य को प्रत्यक्ष करती है।" इसलिए जीवनी साहित्य एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन कहलाता है। चरित्र नायक के चरित्रों का अंकन भी जीवनी में होता है।

3] देशकाल और वातावरण :-- तथ्याश्रित विधा होने के नाते देशकाल, वातावरण जीवनी का महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है। जीवनी में अगर जीवनवृत्त है तो उसका परिपार्श्व देश-काल वातावरण है। नायक के चरित्र के विकास पर तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव अवश्य रहा करता है। अतः इस तत्त्व के बिना नायक का जीवन वृत्त और चरित्र-चित्रण अधूरा रह जाएगा। लेकिन यहाँ यह भी स्मरण रखना है कि यह तत्त्व परिपार्श्व के रूप में है। उसका अधिक चित्रण उपयुक्त नहीं बाधक होता है । चरित्र नायक के चरित्र को उद्घाटित करने में सहायक बाह्य-परिवेश जैसे- सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थति, सांस्कृतिक स्थिति राजनैतिक स्थिति आदि के

अंकन के साथ-साथ आंतरिक परिवेश अर्थात मानसिक परिवेश का चित्रण भी महत्वपूर्ण होता है। नायक के जीवन में घटित अनुकूल प्रतिकूल स्थितियों का चित्रण तथा उसके साथ जुड़ी मानसिकता का चित्रण बाह्य-परिवेश से भी अधिक महत्वपूर्ण माना जाएगा।

4] भाषाशैली या भाषा शिल्प :-- जीवनी में भाषा पर दो तरह से विचार करना पड़ेगा। एक तो जीवनी में संवादों की योजना होती है। जीवनी की वस्तु, चरित्र, वातावरण यथार्थ होता है, लेकिन संवाद काल्पनिक | इसलिए संवाद-योजना में लेखक को बड़ा सतर्क होना पड़ता है। जहाँ तक संवादों की भाषा का सवाल है, वह पत्रानुकूल तथा देश-कालानुरूप हो सकती है। अर्थात चरित्र के व्यक्तित्त्व तथा परिवेश के अनुरूप भाषा स्वाभाविक कहलायी जाएगी। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं आवारा मसीहा के चरित्र तत्कालीन बंगाली ही बोले या मात्र बंगाली ही| हमारा तात्पर्य केवल इतना है कि लगे कि चरित्र बोल रहे हैं, लेखक नहीं। संपूर्ण रचना की भाषा-विषयानुरूप सहज सरस हो तो जीवनी आधिक सुंदर सशक्त होगी। अन्य प्रबंधात्मक विधाओं की तरह जीवनी में भी ऐतिहासिक, नाटकीय, भावात्मक, मनोविश्लेत्मक, डायरी, गवेषणात्मक,पत्रात्मक, आत्मकथात्मक शैलियों का प्रयोग किया जाता है। अपने कथ्य को कलात्मक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए हर जीवनी लेखक आवश्यक शिल्प-शैली का वर्णन करता है। 'आवारा मसीहा' की भूमिका में विष्णु प्रभाकर ने कहा है -- "श्रेष्ठ जीवनी लेखक, काल, देश व्यक्ति और घटनाओं की सीमाओं को तोड़ कर अनुभूतियों के सौंदर्य में विक्षेपण करता है। शुद्ध कला और मानदंडों के बीच संतुलन और सामंजस्य का प्रणयन करता है । "

5] उद्देश्य :-- अपने प्रिय या आदर्श व्यक्ति की स्मृति स्थायी रखना चरित्र-नायक के रूप में आदर्श प्रस्तुत करना, बोध या ज्ञान प्राप्त करना आदि के लिए जीवन-चरित्र लिखे जाते रहे है। लेकिन आधुमिक जीवनी विधा का यह उद्देश्य नहीं है। पाश्चात्य विद्वानों ने जीवनी को व्यक्तित्व का यथार्थ या सत्य दर्शन करानेवाली विधा कहा है। कहा जा सकता है कि व्यक्ति के माध्यम से जीवन साक्षात्कार जीवनी का उद्देश्य है।

by Dr. Sangita Chitrakoti